

यवमती स्त्री. (तत्.) काव्य. एक अर्ध समवर्णिक छंद जिसके विषम चरणों में क्रमशः रगण, जगण, रगण, जगण (रज रज) होते हैं तथा समचरणों में जगण, रगण, जगण, रगण (जर जर) और गुरु होते हैं।

यवमद्य पु. (तत्.) जौ की शराब।

यवशर्करा स्त्री. (तत्.) जौ से निर्मित शक्कर।

यवागू (तत्.) प्राचीन भारत का एक लोकप्रिय खाद्य पदार्थ जो चावल या जौ के माँड से तैयार किया जाता था।

यशः काया स्त्री. (तत्.) यशरूपी काया, यश, कीर्ति रूपी शरीर।

यशःपटह पुं. (तत्.) एक प्रकार का ढोल, ढक्का 2. डुगडुगी।

यशःशेष वि. (तत्.) मृत, जिसका अब केवल यश ही शेष रह गया है।

यश पुं. (तत्.) किसी कार्य, गुण आदि के लिए मिलने वाली प्रशंसा, प्रसिद्धि या प्रतिष्ठा, कीर्ति, ख्याति, शोहरत।

यशद पुं. (तत्.) जस्ता धातु।

यशब पुं. (अर.) चीन और लंका में पाया जाने वाला एक प्रकार का हरा पत्थर।

यशम पुं. (अर.) एक प्रकार का पत्थर जिसकी चौकोर टिकिया, कलेजे, दिल, दिमाग के रोगों में ताबीज़ के रूप में पहनी जाती है, इस पत्थर को 'यशब' भी कहते हैं, संग-ए-यशब।

यशस्विनी वि. (तत्.) ख्याति के आधार पर प्रसिद्ध, यश से परिपूर्ण, यशस्वी।

यशस्वी पुं. (तत्.) वि. यश के आधार पर विख्यात, कीर्तिमान, प्रसिद्ध।

यशी वि. (तद्.) यशवाला, कीर्तिवाला, यशस्वी।

यशील वि. (तद्.) यशवाला, यशी, प्रसिद्धिवाला, यशस्वी।

यशुमति वि. (तत्.) 1. यशवाली, कीर्तिवती, यशस्विनी 2. यशोदा, जसोदा।

यशोदा वि. (तत्.) 1. यश प्रदान करने वाली, कीर्तिप्रदायिका 2. यशुमति, जसोदा।

यशोधन वि. (तत्.) 1. यश से परिपूर्ण, यशवान 2. स्वाभिमानी, आत्मगौरवपूर्ण।

यशोधरा वि. (तत्.) 1. कीर्तिवाली, यशवाली ख्यातिसम्पन्न 2. जसोदा।

यशोमति वि. (तत्.) 1. यशवाली, कीर्तिवाली, प्रसिद्ध 2. स्त्री. यशुमति, जसोदा (यशोदा)।

यशोलिप्सा स्त्री. (तत्.) यश की लिप्सा, प्रख्यात होने की लालसा, यश प्राप्ति के लिए बेताब।

यशोलिप्सु वि. (तत्.) प्रख्यात होने की लिप्सा वाला, प्रसिद्धि पाने के लिए लालायित।

यष्टा पुं. (तत्.) यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला, यजमान, जजमान।

यष्टि स्त्री. (तत्.) 1. छड़ी, पतली डंडी, सोटी 2. बाँस, झंडा, पताका 3. वृक्ष की पतली टहनी 4. लता, बेल, जैसे- यष्टिमधु, मुलहठी।

यष्टिक पुं. (तत्.) 1. सोंटी, लाठी, यष्टि 2. टिटिहरी की जाति का एक पक्षी।

यष्टिका पुं. (तत्.) 1. मुलहठी 2. छोटी डंडी, संकेतिका छड़ी 3. वापी, बावड़ी, जल का सीमित स्रोत।

यष्टिगुहा पुं. (तद्.) एक प्रकार का पीला कृमि जिसके शरीर पर रोम होते हैं, प्रायः जलवासी कीट।

यष्टित्रय पु. (तत्.) क्रिकेट के तीन विकेट, क्रिकेट खेलने के लिए इन डंडियों पर दो गिल्लियाँ रखी जाती हैं।

यष्टिपाद पु. (तत्.) डंडी रूपी लकड़ी का एक नर कीड़ा, जिसका आकार चपटा होता है।

यह सर्व. (तद्.) आस-पास के व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि के लिए संकेतार्थक शब्द, बहुवचन रूप 'ये'; कारकीय परसर्ग की संयुक्ति में 'यह' का रूप है 'इस' और ये का रूप 'इन' हो जाता है।

यहाँ क्रि.वि. (देश.) इस स्थान पर, इस जगह, इधर, समीप का स्थान इंगित करने के लिए प्रयुक्त।